Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, MAR-APR, 2019, VOL- 6/50

कन्या भ्रूण हत्या की रोक थाम में सरकारी एंव गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

आराधना सिंह
(शोध–छात्रा), एस0 आर0 के0 पी0जी0 कॉलेज, फिरोजाबाद

Abstract

कन्याा भ्रूण हत्या के सम्बन्ध में जन जागरूकता जनित करने वाले स्त्रोतों के बारे में सूचनादाताओं के अभिमत स्पष्ट हैः कि कन्याा भ्रूण हत्या नियंत्रण के लिए राष्ट्र स्तर पर ही नहीं; अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता जनित करने के प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर जन चेतना मंचों, रैलियों द्वारा, चौकसी केन्द्रों की स्थापनाएं करके, नियंत्रण कार्यक्रम, संचार साधनों द्वारा, कन्याा भ्रूण हत्या विरोधी एवं दुष्प्रभावों सम्बन्धी प्रचार–प्रसार कराकर, शोध संस्थानों, शोध संगोष्ठियों, कार्यशालाओं/ सेमीनारों द्वारा एवं संचार माध्यम इत्यादि की मदद से विभिन्न 'सचेतन कार्यक्रम' संचालित एवं क्रियान्वित किए जा रहे हैं; फिर भी वांच्छित उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं हो रही हैं। जिसके लिए विभिन्न कारण उत्तरदायी हैं।

पारिभाषिक शब्दावलीः *कन्याा भ्रूण हत्या] ज्वलंत, संवैधनिक प्रावधान, महिला संगठन ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

पद्धति : अध्ययन क्षेत्र एवं समग्र के आकार को दृष्टिगत रखते हुए संगणना विधि का प्रयोग किया है ताकि प्रस्तुत अध्ययन में अपेक्षाकृत अधिक परिशुद्धता एवं विश्वसनीयता की प्राप्ति सम्भव हो सके। प्रस्तुत अध्ययन **'अनुभवात्मक' (Empirical)** होने के कारण मुख्यतः प्राथमिक तथ्यों से सम्बन्धित है तथापि महिलाओं के विरूद्ध अपराध सम्बन्धी तथ्यात्मक जानकारी, विषय से सम्बन्धित साहित्य तथा संप्रत्यात्मक संरचना के लिये प्रलेखीय स्रोतों से द्वैतीयक सामग्री का संकलन भी किया गया है।

परिकल्पनाएं :

1. ''कन्या भ्रूण हत्या'' रोकने में सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की भूमिका अहुत असरदार सिद्ध नहीं हो रही है।
2. ''कन्या भ्रूण हत्या'' की रोकथाम करने में सरकारी विधान एवं कानून बहुत कारगर सिद्ध नहीं हो रहे हैं।

विवेचना, विश्लेषण एवं निष्कर्षः कन्या भ्रूण हत्या भारत की एक ज्वलंत एवं अनसुलझी समस्या है। किसी भी सामाजिक समस्या को हल करने के लिए तीन दृष्टिकोणों (1) बहुकारकीय अन्तःक्रिया (2) पारस्परिक सम्बन्ध तथा (3)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सापेक्षिकता; पर दृष्टिपात एवं सहयोग प्राप्त करना उचित होता है क्योंकि कोई भी समस्या किसी एक कारण से नहीं, अपितु विभिन्न कारकों के सम्मिश्रण से जनित होती है। इसलिए समस्या को पृथक्कृत कर सुलझाना अथवा उसका समाधान खोजना सम्भव नहीं होता है; क्योंकि सापेक्षिकता की दृष्टि से किसी भी सामाकि समस्या का समाजिक परम्पराओं एवं संवैधनिक प्रावधानों से प्रत्यक्ष तथा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।**'महिला संगठन' की सदस्या चंद्रिका[5] (1998)** के अनुसार कन्याा भ्रूण हत्या के विरूद्ध राष्ट्र स्तर पर अभियान चलाने में अग्रणी भूमिका निर्वाह करने वाली यह एक मात्र अभिकरण है जो लोकतांत्रिक देश में मंत्रालयों के साथ मिलकर कार्य करती हैं; वहीं राष्ट्र जनसंख्या निधि आदि का भी सहयोग प्राप्त करती है।

राष्ट्र में कन्याा भ्रूण हत्या के विरूद्ध समन्वित प्रयास के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर रोकथाम की दिशा में– (1) पहले से चालू गतिविधियों पर प्रकाश डालने, (2) नई गतिविधियोंः समारोहों, नुक्कड़ नाटकों, कार्यशालाओं, सेमीनारों, रेडिया और टेलीविजन कार्यक्रमों जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जो समाज में जन जागरूकता जनित करते हैं।

अनुसंधित्सु ने कन्याा भ्रूण हत्या नियंत्रण के सम्बन्ध में सरकार, गैर सरकारी/ स्वैच्छिक संगठनों द्वारा निभायी जा रही विभिन्न भूमिकाओं के सम्बन्ध में भी जानकारी हासिल की है। पूछा गया कि– 'क्या कन्या भ्रूण हत्या पर नियंत्रण पाने के लिए सरकार प्रयास कर रही है?' सभी 300 सूचनादाताओं के साक्षात्कार सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों पर निम्न तालिका (1) संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं0 (1) : क्या कन्याा भ्रूण हत्या की रोकथाम तथा उपचार के लिए सरकार प्रयास कर रही है?

क्रम	*प्रत्युत्तर*	*आवृत्तियाँ*	*प्रतिशत*
1	'हाँ'	156	52.00
2	'नहीं'	––	00.00
3	उदासीन	144	48.00
	कुल योग	300	100.00

तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 300 निदर्शितों में से 156(52 प्रतिशत) निदर्शितों ने 'हाँ' उत्तर प्रदान किए लेकिन इन निदर्शितों का कहना है कि सरकार जो प्रयास कर रही है 'नाकाफी है'। पुनः

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पूछे जाने पर कि 'आपकी दृष्टि में सरकार किस दिशा में प्रयास कर रही है?' सभी 300 सूचनादाताओं के सर्वेक्षण से प्राप्त उत्तरों पर निम्न तालिका 7(2) संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं0 (2) : आपकी दृष्टि में सरकार किस दिशा में प्रयास कर रही है?

क्रम	*सूचनादाताओं के प्रत्युत्तर*	*सूचनादाताओं की आवृत्तियाँ/प्रतिशत*				
		'हाँ'	*'नहीं'*	*उदासीन*	*अनुत्तरित*	*योग*
1	जन जागरूकता	240 (80.00)	-- (00.00)	60 (20.00)	-- (00.00)	300 (100.00)
2	कानून का अनुपालन कराना	147 (40.00)	-- (00.00)	153 (51.00)	-- (00.00)	300 (100.00)
3	बालिकाओं का सशक्तिकरण	201 (67.00)	12 (04.00)	87 (29.00)	-- (00.00)	300 (100.00)
4	कन्याा भ्रूण हत्या 'सर्विलेन्स केन्द्रों' की स्थापनाएं	198 (66.00)	27 (09.00)	75 (25.00)	-- (00.00)	300 (100.00)
5	चिकित्सा केन्द्रों पर नियंत्रण का प्रयास	150 (50.00)	-- (00.00)	60 (20.00)	90 (30.00)	300 (100.00)

(नोट– कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आंकड़े प्रतिशतता दर्शाते हैं)

उक्त तालिका (2) के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि–

(1) 240(80 प्रतिशत) निदर्शितों ने स्वीकार किया है कि सरकार कन्याा भ्रूण हत्या की रोकथाम के लिए जन जागरूकता जनित करने के प्रयास कर रही है।

(2) 147(49 प्रतिशत) निदर्शितों ने स्वीकार किया है कि सरकार कन्याा भ्रूण हत्या की रोकथाम के लिए रक्त जाँच केन्द्रों की स्थापनाएं कर रही है।

(3) 201(67 प्रतिशत) निदर्शितों का कहना है कि सरकार कन्याा भ्रूण हत्या की रोकथाम के लिए परामर्श केन्द्रों की स्थापनाएं कर रही है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(4) 198(66 प्रतिशत) निदर्शितों ने बताया कि सरकार कन्याा भ्रूण हत्या से बचाव के लिए क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप 'सर्विलेन्स' केन्द्रों की स्थापनाएं कर रही है।

(5) प्रथम दृष्टया एक भी सूचनादाता ऐसा नहीं पाया गया कि जिसने 'चिकित्सा केन्द्रों पर नियंत्रण का प्रयास' करने की बात कही हो। समझाने पर 50 प्रतिशत निदर्शितों ने स्वीकारोक्तियाँ की हैं।

सूचनादाताओं से पूछा गया कि 'जन जागरूकता जनित करने के लिए सरकार क्या–क्या प्रयास कर रही है?' सभी 300 सूचनादाताओं से प्राप्त जानकारी पर निम्न तालिका (3) संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं0 (3) : कन्याा भ्रूण हत्या के प्रति जागरूकता जनित करने के लिए सरकारी प्रयास

क्रम	*सरकारी प्रयास*	*निदर्शितों के अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिशत)*				
		'हाँ'	*'नहीं'*	*उदासीन*	*अनुत्तरित*	*योग*
1	राष्ट्रीय स्तर पर कन्याा भ्रूण संरक्षण के लिए महिलाओं को सशक्त करना	150 (53.00)	–– (00.00)	141 (47.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
2	जन चेतना मंचों द्वारा रैलियां प्रायोजित कराना	300 (00.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
3	जगरूकता केन्द्रों की स्थापनाएं करके जागरूकता जनित करना	99 (33.00)	30 (10.00)	171 (57.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
4	नियंत्रण कार्यक्रमों के क्रियान्वयनः (1) राष्ट्र स्तर पर (2) प्रादेशिक स्तर पर	180 (60.00) 81 99	39 (13.00) 18 21	81 (27.00) 27 54	–– (00.00) –– ––	300 (100.00)
5	संचार साधनों (रेडियो, दूरदर्शन, पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र) द्वारा जागरूकता जनित करना	300 (100.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
6	कार्यशालाओं/सेमीनारों, रैलियों द्वारा जागरूकता कार्यक्रम चलाना	210 (70.00)	–– (00.00)	60 (20.00)	30 (10.00)	300 (100.00)
7	संचार अभिकरणों (दूरदर्शन, समाचार पत्र, मीडिया आदि) द्वारा प्रचार प्रसार कार्यक्रम कराना	198 (66.00)	–– (00.00)	72 (24.00)	30 (10.00)	300 (100.00)

(नोट– कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आंकड़े प्रतिशतता दर्शाते हैं)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तुत तालिका में कन्याा भ्रूण हत्या के सम्बन्ध में जन जागरूकता जनित करने वाले स्त्रोतों के बारे में सूचनादाताओं के अभिमत स्पष्ट हैः स्तम्भ (1) में प्रदर्शित सूचनादाताओं की आवृत्तियाँ तथा प्रतिशतताओं से स्पष्ट है कि कन्याा भ्रूण हत्या नियंत्रण के लिए राष्ट्र स्तर पर ही नहीं; अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता जनित करने के प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर जन चेतना मंचों, रैलियों द्वारा, चौकसी केन्द्रों की स्थापनाएं करके, नियंत्रण कार्यक्रम, संचार साधनों द्वारा, कन्याा भ्रूण हत्या विरोधी एवं दुष्प्रभावों सम्बन्धी प्रचार–प्रसार कराकर, शोध संस्थानों, शोध संगोष्ठियों, कार्यशालाओं/ सेमीनारों द्वारा एवं संचार माध्यम इत्यादि की मदद से विभिन्न 'सचेतन कार्यक्रम' संचालित एवं क्रियान्वित किए जा रहे हैं; फिर भी वांच्छित उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं हो रही हैं। जिसके लिए विभिन्न कारण उत्तरदायी हैं।

उक्त तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्षतः कहा जा सता है कि अशिक्षा, अन्ध विश्वास, भाग्यवादी विचारधारायें, जाति व्यवस्था के नियम, महिलाओं की पुरूषों पर आर्थिक निर्भरता, विधानों को लागू करने में प्रशासनिक उदासीनता, स्वस्थ्य जनमत निर्माण का अभाव, सामाजिक विधानों की अवहेलना करने वालों को उचित दण्ड न मिल पाना, सामाजिक विधानों की उपयोगिता का प्रचार– प्रसार न करना, सामाजिक विधानों के सैद्धान्तिक स्वरूप तथा व्यवहार में भिन्नता, निर्धनता तथा विभिन्न सामाजिक विधानों के प्रति जनसाधारण में विश्वास पैदा न कर पाना आदि कारण भारतीय सामाजिक विधानों की असफलता के मार्ग में बाधक कारक हैं फिर भी सामाजिक विधान प्रासंगिक हैं।

संदर्भः

Seltznik G.J. ; (2001) Social Legislations, Alfred Pub. Co. Serman OX, U.S.A., p.1

Spicer D.W. ; (2008) "Social Problems", Random House Pub. & Co., Toronto, p. 74.

Park J.E. & Park T. ; (2001) A Text Book of Social Problems, Banarasidas Bhanot Publishers, Jabalpur (M.P.), p. 715.

…… (2006) Report of HGMESM (Health Group of Medical Education & Support Manpower) Health Services and Medical education : A programme for immediate action : Govt. of India Pub. Karol Bagh, Delhi, 1986, p. 96.

Thomas Gracious ; (2008) Feticide in India : Myth & Reality, Rawat Publications, Jaipur (Rajasthan), p.413.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies